

## Khulla Chidiya Ghar or Open Birdhouse



The amount of land covered by lush green trees is getting smaller every day and so the balance of gases these trees help to control is changing. At a grassroots level GVNML are taking steps to help mitigate the global problems climate change brings by developing eco-parks. GVNML is encouraging village communities in Rajasthan to dedicate 2-3% of the total village land to become protected forest areas called 'bannis'.

These areas of 10 – 20 hectares provide a place for birds to nest, wildlife to take rest, make their homes and give birth to offspring. 15 different species of trees have been planted, most of them indigenous types and 30 different grasses grow in the bannis with the seeds spreading naturally to

other areas through the birds. 40 bird species take shelter here, 7 of which are endangered including small and large owls. The entire area is free from artificial developments such as insecticides, pesticides, plastics and chemical fertilisers that are harmful to nature and can destroy the eco-system.



At first these eco-parks were met with some resistance by villagers, who failed to see the long term impact, wanting short term results instead. But since they have been tending to the bannis,

they are starting to believe in the vision of these special areas and can see nature regenerating naturally through them. Communities are now demanding bannis are established in their village



**“धरती माँ ”**  
**प्रकृति ही ईश्वर है ।**

पेड़ लग रहे हैं, पत्ते गिर रहे हैं ।  
घास आ रहा है, गायें चर रही हैं ।  
गोबर हो रहा है, मिट्टी बन रही है ।  
मिट्टी पानी हरियाली से जीवन चल रहा है ।  
इस धरा में ही वापस समा रहा है ।  
इस चक्र में हम सब लग रहे हैं ।

**धरती से कोई बड़ा नहीं –**  
**नम से कोई उंचा नहीं ।**

visitors to rural Rajasthan may be surprised to come across the oasis of Laporiya. A village covered with trees and chiming with the sound of birdsong is a rarity in this harsh, semi-arid environment.

In 10 years Laporiya has been transformed by a simple principle-Khulla Chidiya Ghar or the Open Birdhouse mission.

Within a 30 hectare area, no one must harm the wild animals and birds; trees and shrubs cannot be cut and encroaching on the land is not allowed. The result is that Laporiya is now home to 135 different species of birds, some very rare indeed. Peacocks, parrots and other spectacularly colourful birds roam freely around the village.



The community works together, devoting time to spreading seed, planting trees and providing water to help maintain the Khulla Chidiya Ghar. In return, the Open Birdhouse enables nature to take its course and increase the fertility of the soil and the quality of life for the 300 families who call Laporiya home. The tree roots slow the flow of monsoon water, encouraging it to soak into the ground; the birds play a large part in the spreading of seeds and the natural fertilization of the soil. They also ensure a healthy level of insects is maintained.



GVNML has shown that by forming an alliance with nature and pledging to save wildlife, a simple idea can have a remarkable impact, bringing joy to the lives of many hundreds of people.



# एक गांव ने बचाए, बड़े कानों के उल्लू

प्रकृति और जीव-जन्तुओं को बचाने में जुटे ग्रामीण |

▼ **विनोद सिंह चौहान**

**जयपुर, 26 दिसम्बर।** नेचर से प्रेम करने वालों के लिए खास और खुश खबर! दूदू के पास एक गांव के लोगों के प्रकृति प्रेम ने नाट्य होती प्रकृति और जीव-जन्तुओं को नया जीवन दे दिया है। राजस्थान के लिए सबसे महत्वपूर्ण माने जा रहे ग्रेट होर्नर्ड आऊल यानि बड़े कानों वाले उल्लू सहित दर्जनों पक्षी और वनस्पतियों का यहां संरक्षण किया जा रहा है। इससे उत्साहित वन विभाग ने इस गांव में वनस्पतियों और पशु-पक्षियों की जानकारी जुटाने और उन पर शोध का काम हाथ में लिया है।

दूदू से 15 किलोमीटर दक्षिण में बसे लापोड़िया गांव में 20 वर्षों से जीवीएनएमएस संस्था गांव के लोगों को साथ लेकर भूमि सुधार और जल संरक्षण के कार्य

में लगी है। जब संस्था ने प्रकृति संरक्षण का कार्य हाथ में लिया तो वन विभाग भी उसके साथ हो लिया। वन विभाग के आला अधिकारियों ने लापोड़िया के दौरे में

**गांव में पशु-पक्षी व कीट-पतंगे**

स्तनधारी	रेंगने वाले जंतु	कीट-पतंगे
भेड़िया	दीमम छिपकली	ड्रेगन फ्लाई
गोदड़	भूरी छिपकली	गिरगिट
लंगूर	चट्टानी छिपकली	बगस, बीटल
बूच	पाटागोह	आंट, मोथ
नेवला	वामणी	सिकाड़ा
भौर	धारिया वामणी	ग्रास होपर
लोमड़ी	दुमही	माइटस, स्पाइडर
भाऊ चूहा	धामण	स्क्रॉपियन
रोजड़ा	काला नाग	फायर फ्लाई

पाया कि गांव के लोग वास्तव में प्रकृति संरक्षण में लगे हुए हैं। विभाग के प्रधान मुख्य वन संरक्षक अभिजीत घोष ने भी प्रकृति संरक्षण के लिए किए गए कार्यों की सराहना की है। विभाग ने अब इस क्षेत्र में दिखाई दे रहे पशु-पक्षियों और वनस्पतियों की जानकारी और शोध का कार्य हाथ में लिया है। विभाग ने पक्षी विशेषज्ञ सोहनलाल सैनी को वहां भेजा। दस दिन के पैदल भ्रमण और शोध से पता चला है कि यहां जैविक विविधता के कई घटक हैं, जिसमें करीब 84 प्रकार के पक्षी, 133 प्रकार की वनस्पतियां, 29 प्रकार की वनोषधियां, 14 प्रकार के स्तनधारी प्राणी, 10 प्रकार के रेंगने वाले जंतु और 16 प्रकार के कीट-पतंगों की पहचान की गई है। सैनी ने एक ही स्थान पर आठ बड़े कानों वाले उल्लू देखे, जो पहले राज्य में नहीं देखे गए।